IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्यकालीन संत कवयित्रियाँ

शोधार्थी

अवनीश कुमार यादव

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

भक्ति साहित्य में स्त्री कवियों की उपस्थिति भारतीय संत परंपरा के बहुआयामी स्वरूप की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है। उनकी रचनाएँ न केवल आध्यात्मिक गहराई की धारा को प्रवाहित करती हैं, बल्कि वे स्त्री जीवन के संघर्षों और संवेदनाओं को भी सजीव रूप में प्रस्तुत करती हैं। भक्ति साहित्य में स्त्री संत कवयित्रियों की उपस्थिति न केवल प्रेरणादायक है, बल्कि साहित्यिक इतिहास का वह धारा है, जो स्त्री की आंतरिक चेतना, अनुभव और साधना को नई ऊंचाइयों पर ले जाती है। पुरुष संतों की भाँति, इन कवयित्रियों ने भी अपनी गहरी भक्ति, सामाजिक विद्रोह और अध्यात्मिक विवेक से साहित्यिक परंपरा को समृद्ध किया। उनके शब्दों में केवल ईश्वर से प्रेम नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त विषमताओं के प्रति एक मौन विद्रोह भी था।

उमा, सहजोबाई, दयाबाई, पार्वती और मुक्ताबाई जैसी कवयित्रियाँ अपने पदों के माध्यम से उस समय की सामाजिक और धार्मिक व्यवस्थाओं को चुनौती देती हैं, जहाँ स्त्री की भूमिका को सीमित कर दिया गया था। उमा के पदों में निर्गुण की ओर झुकाव और गुरु के प्रति असीम प्रेम की झलक मिलती है। उनके भाव इतने गहरे थे कि वे गुरु को जीवन की सर्वोच्चता मानती थीं। उनकी भाषा की सहजता और भावनाओं की तीव्रता उनके पदों को एक गहरे आध्यात्मिक अनुभव में बदल देती है। उमा, सहजोबाई, दयाबाई, पार्वती, मुक्ताबाई और इंदामती जैसी संत कवयित्रियों ने भक्ति साहित्य में स्त्री अनुभवों और दृष्टिकोण को वह ऊँचाई दी है, जिसे इतिहास अक्सर अनदेखा कर देता है। उनकी रचनाएँ केवल धार्मिक या भक्ति साहित्य का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे स्त्री चेतना की अद्वितीयता और सामाजिक असमानताओं के प्रतिरोध का जीवंत दस्तावेज़ भी हैं। भक्ति की यह स्त्री धारा न केवल साधना और समर्पण की ऊँचाइयों को छूती है, बल्कि समाज और संस्कृति के जटिल सवालों से भी सीधे संवाद करती है।

उमा की कविता, जो निर्गुण काव्य के उस सूक्ष्म संसार का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ निराकार ब्रह्म और सूफ़ीमत के गहरे संकेतों का मेल होता है, उनकी आंतरिक यात्रा का प्रतीक है। वे संतों की शिक्षाओं को केवल ग्रहण करने वाली शिष्या भर नहीं थीं, बल्कि उन्होंने इन शिक्षाओं को अपने जीवन का मार्गदर्शन बना लिया। उनके पदों में एक अनगिनत संघर्ष है, जो संसार के मोह से परे जाकर उस निराकार ब्रह्म की शरण में पहुँचने की लालसा को दर्शाता है।

उमा के पदों की भाषा में एक अद्भुत सहजता और स्थानीय रंग हैं, जो उनके अनुभवों की सत्यता को और अधिक प्रामाणिक बनाते हैं। उनके शब्द किसी शिल्पी द्वारा गढ़ी हुई कृति की तरह नहीं, बल्कि उनके हृदय की गहराइयों से निकले हुए सहज स्वर हैं, जो पाठक के अंतर्मन को छू लेते हैं। उनके पदों में जो प्रेम और समर्पण का भाव है, वह सतगुरु के प्रति उनके अटूट विश्वास को दर्शाता है। इस भावनात्मक गहराई को उनके एक पद में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

"सहेल्या है भारो बहुत सुधारो, सतगुरु सैन मिलायो। राम तमारा नाम मै को रैण-दिवस तलफाय।"[1]

यहाँ उमा के भीतर की वह तड़प, वह तलफ, राम के नाम में विलीन हो जाने की अभिलाषा को दर्शाती है, जो प्रेम और ज्ञान की उस पराकाष्ठा को प्रकट करती है, जहाँ केवल निराकार से साक्षात्कार ही आत्मा की शांति है। उमा की यह अनुभूति सतगुरु के बिना अधूरी है, और यही कारण है कि उनके पदों में सतगुरु का स्थान सर्वोपरि है।

राजस्थानी भाषा का स्पष्ट प्रभाव उनकी कविताओं को एक अनूठी पहचान देता है। उनकी भाषा में वह मिठास और सरलता है, जो लोकभाषा की सजीवता और गहराई को आत्मसात करती है। उनके पदों में छंदों का अभाव हो सकता है, परंतु उनकी भावनाओं की तीव्रता और अनुभूतियों की प्रखरता इस कमी को पूरी तरह ढँक लेती है। उमा का भक्ति काव्य किसी बड़े काव्यात्मक ढांचे में नहीं बंधा, फिर भी उनकी काव्य-संवेदनाएँ इतनी सजीव और प्रखर हैं कि वे एक अनमोल धरोहर की तरह हमारे सामने आती हैं।

उमा की रचनाएँ प्रेम, ज्ञान, और योग के सूक्ष्म मंथन से गुज़रती हैं, जहाँ उनका लक्ष्य केवल भक्ति नहीं, बल्कि उस अद्वितीय सत्य की खोज है जो जीवन के मर्म को छूता है। उनके पदों में यह संघर्ष, यह आत्मिक मंथन, उन्हें औरों से अलग करता है। इस साधारण प्रतीत होने वाली भाषा में छिपी अद्वितीयता उनके अनुभवों की गहराई और उनकी आत्मा की सच्ची तड़प को दर्शाती है।

पार्वती की वाणियाँ, जो उनकी भक्ति और साधना की गहनता को दर्शाती हैं, भारतीय संत परंपरा के एक महत्वपूर्ण पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके जीवन और समय के बारे में सीमित जानकारी होने के बावजूद, उनकी रचनाओं के माध्यम से हम उनके विचारों और आध्यात्मिक दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। पार्वती एक निस्पृह और सांसारिक इच्छाओं से मुक्त साधिका थीं, जिन्होंने गुरु के चरणों में अपने जीवन का समर्पण किया। उनके पदों में सांसारिक मोह और भौतिक सुखों की घोर उपेक्षा है, जो उनकी साधना के केंद्र में गुरु की सेवा और निरपेक्षता की भावना को प्रमुखता से स्थापित करता है।

पार्वती के पदों में संसार से वैराग्य और आत्मिक उत्थान की अभिलाषा का भाव स्पष्ट है। धन और यौवन जैसी क्षणिक और अस्थिर चीज़ों से पार्वती का कोई लगाव नहीं था; वे इन्हें माया का रूप मानकर ठुकराती हैं और इनकी अपेक्षा गुरु की सेवा को सर्वोपरि मानती हैं। उनके पदों में बार-बार यह संदेश उभरता है कि वास्तविक मोक्ष और शांति केवल गुरु की सेवा और आत्म-त्याग से ही संभव है।

[1] डॉ.सावित्री सिन्हा,मध्यकालीन हिंदी कवयित्रियाँ,आत्माराम एंड संस प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण-1953,पृष्ठ-47

यह पद सांसारिक भोगों और इच्छाओं से मुक्त होकर गुरु की शरण में जाने की शिक्षा देता है। पार्वती के लिए भौतिक दुनिया का मोह मायावी और अस्थिर है, जो आत्मा को उसकी सच्ची मंज़िल से भटका सकता है। वे इस मायाजाल को तोड़ने और गुरु की शरण में जाने को ही सच्ची मुक्ति का मार्ग मानती हैं। इस प्रकार, उनकी रचनाएँ भक्ति और वैराग्य की उन गहन अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, जो एक साधक के जीवन का आधार होती हैं।

पार्वती की वाणियों में अवधूत वैरागियों पर अनास्था का भाव भी दिखता है, जो संभवतः उनके समय के नाथपंथी साधुओं के प्रति एक विरोधी दृष्टिकोण को दर्शाता है। उनके पदों में नाथपंथी अवधूत साधुओं के भीतर आए पाखंड और भ्रष्टाचार की आलोचना है। इस विरोधाभास का एक उदाहरण उनके निम्न पद में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

"काक दृष्टि बको ध्यानी। अवस्था भुवंगम अहारी,

अवधूत सी वैरागी पारवती। है या सब भेषधारी।।"[2]

यहाँ पार्वती उन साधुओं की आलोचना करती हैं जो मात्र बाहरी दिखावे के लिए वैराग्य का प्रदर्शन करते हैं, परंतु उनके भीतर सच्ची साधना और त्याग का अभाव होता है। इस संदर्भ में पार्वती ने ऐसे साधुओं के ऊपर अपनी अनास्था प्रकट की है, जो सच्ची साधना से दूर होते हुए भी साधुता का आडंबर बनाए रखते हैं। उनके लिए सच्चा वैराग्य और साधना केवल गुरु की सेवा और आत्म-शुद्धि के मार्ग पर चलने में है, न कि किसी बाहरी प्रदर्शन या समाज में प्रतिष्ठा पाने के प्रयास में।

पार्वती की रचनाओं में योग और गुरु की महिमा का वर्णन प्रमुख है, परंतु उनमें कोई विशेष भावनात्मक अनुभूति या प्रेम का प्रगाढ़ता से वर्णन नहीं मिलता। उनके पद शुष्क योग और गुरु की सेवा पर केंद्रित हैं, जिसमें वे सांसारिक आकर्षणों को ठुकराकर आत्मा को शुद्ध करने का मार्ग सुझाती हैं। उनके लिए भक्ति का अर्थ केवल भावनाओं का आवेग नहीं, बल्कि एक अनुशासित साधना और आत्मिक शुद्धि की प्रक्रिया है। पार्वती की यह दृष्टि साधना के उस पक्ष को उजागर करती है जहाँ आत्मा केवल गुरु के सान्निध्य में ही पूर्णता प्राप्त कर सकती है।

सहजोबाई भक्ति की आकाशगंगा में एक अनूठी चमक के साथ उपस्थित हैं, जिनकी कविताएँ न केवल भक्ति और वैराग्य की अद्भुत गहराई को प्रदर्शित करती हैं, बल्कि साधना की गूढ़ता और आत्मविस्मृति के अद्वितीय अनुभवों को भी व्यक्त करती हैं। सहजोबाई का भक्ति स्वरूप एक अद्वितीय मिश्रण है—जहाँ प्रेम और वियोग का बोध न केवल उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियों का परिचायक है, बल्कि वे इस स्थिति में खुद को खोकर ईश्वर में लीन हो जाने का संकेत देती हैं।

उनकी पंक्ति,

"प्रेम दिवानी जो भयो, नेम धरम गयो खोय।

सहजो नर नारी हँसे, वा मन आनँद होय।"[3]

[2] डॉ.सावित्री सिन्हा,मध्यकालीन हिंदी कवयित्रियाँ,आत्माराम एंड संस प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण-1953,पृष्ठ-50

[3] सं.व्यथित हृदय, हिंदी काव्य की कलामयी तारिकाएँ,अनन्य प्रकाशन,संस्करण-2018,पृष्ठ-45

यह स्पष्ट करती है कि प्रेम की दीवानगी में व्यक्ति अपने नैतिक नियमों और धरम को भी छोड़ देता है, और इस परिप्रेक्ष्य में, सहजो का अनुभव केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक भक्ति के रूप में उभरता है। सहजोबाई की भक्ति में साकार और निराकार उपासना का संतुलन देखने को मिलता है, जिसमें उन्होंने गुरु के प्रति अपनी गहरी निष्ठा और समर्पण को विशेष महत्व दिया है।

दूसरी ओर, दयाबाई भी सहजोबाई की तरह एक प्रमुख स्त्री भक्त कवि हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति की परंपरा को आगे बढ़ाया। महात्मा चरणदास जी की शिष्या के रूप में, दयाबाई ने अपने हृदय में ईश्वर के प्रति अपार प्रेम को अंकित किया है। उनके पदों में सांसारिक मोह को त्यागते हुए, वे ईश्वर प्रेम की गहराई को स्पष्ट करती हैं:

"दया प्रेम प्रगट्यो तिन्है, तन की तनि न सभार। हरि रस में गाते फिरे गृह वन कौन विचार।"[4]

यह पंक्ति दयाबाई के भीतर ईश्वर प्रेम की जोश को दर्शाती है, जहाँ सांसारिक सुखों का मोह उन्हें नहीं बांधता। उनका प्रेम, ईश्वर के प्रति एक अद्वितीय समर्पण का प्रतीक है। दयाबाई की भक्ति में वैराग्य के साथ-साथ दार्शनिक ज्ञान का समावेश भी है। उनकी रचनाएँ केवल धार्मिक या भक्ति साहित्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जीवन के गहरे रहस्यों को उद्घाटित करती हैं।

इस प्रकार, सहजोबाई और दयाबाई की रचनाएँ न केवल स्त्री भक्ति कवियों की एक अद्भुत परंपरा का हिस्सा हैं, बल्कि वे भक्ति साहित्य में वैराग्य, प्रेम और गुरु की महिमा को उजागर करने वाले महत्वपूर्ण स्तंभ भी हैं। इन दोनों कवयित्रियों ने अपने अनूठे दृष्टिकोण से भक्ति के क्षेत्र में नई गहराइयाँ जोड़ी हैं, जो आज भी भक्ति की साधना करने वालों के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं।

मुक्ताबाई और इन्दामती भक्ति साहित्य की प्रमुख संत कवयित्रियाँ हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं से भक्ति की गहराई और सामाजिक चेतना को अभिव्यक्त किया। मुक्ताबाई की कविताएँ निर्गुण भक्ति, आत्मज्ञान, और सांसारिक बंधनों से मुक्ति की ओर उन्मुख हैं, जहाँ गुरु और ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम झलकता है। वहीं, इन्दामती की रचनाओं में भक्ति और ज्ञान के साथ सामाजिक असमानताओं के खिलाफ एक सशक्त आवाज़ सुनाई देती है। इन कवयित्रियों ने भक्ति को न केवल व्यक्तिगत साधना का माध्यम बनाया, बल्कि समाज में बदलाव और जागरूकता का भी संदेश दिया।

मध्यकालीन हिंदी संत कवयित्रियों की रचनाएँ न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं, बल्कि वे समाज में व्याप्त असमानताओं, सामाजिक न्याय, और स्त्री चेतना के प्रति एक सशक्त आवाज़ भी प्रस्तुत करती हैं। उमा, सहजोबाई, दयाबाई, पार्वती, मुक्ताबाई, और इन्दामती जैसे संत कवयित्रियों ने अपने शब्दों के माध्यम से भक्ति की एक नई परंपरा का निर्माण किया, जिसने न केवल व्यक्तिगत साधना को प्रेरित किया, बल्कि समाज में बदलाव और जागरूकता का संदेश भी फैलाया।

इन कवयित्रियों ने अपनी संवेदनाओं और अनुभवों के जरिए भक्ति साहित्य में स्त्री दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया, जो अक्सर साहित्यिक इतिहास में उपेक्षित रहा है। उनके पदों में प्रेम, ज्ञान, और साधना की गहराई के साथ-साथ एक गहरा सामाजिक प्रतिबिंब भी है। इन संत कवयित्रियों की रचनाएँ एक अद्वितीय धरोहर हैं, जो न केवल साहित्यिक परंपरा को समृद्ध करती हैं, बल्कि आज भी हमें आत्म-चिंतन और सामाजिक बदलाव के प्रति प्रेरित करती हैं। उनकी भक्ति और साधना की गूढ़ता हमें यह सिखाती है कि आध्यात्मिकता और सामाजिक जिम्मेदारी का संतुलन कैसे स्थापित किया जा सकता है।

[4] सं.व्यथित हृदय, हिंदी काव्य की कलामयी तारिकाएँ,अनन्य प्रकाशन,संस्करण-2018,पृष्ठ-50